ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

# शोध रूपरेखा की तैयारी एवं आंकड़ा प्रस्तुत करने की विधि

**PG / M.A. 3rd Semester**

**CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology**

**Dr. Manoj Kumar**
**Assistant Professor (Guest)**
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

# शोध रूपरेखा की तैयारी एवं आंकड़ा प्रस्तुत करने की विधि

शोध - रूपरेखा के माध्यम से हम अपने द्वारा किए जाने वाले कार्य को एक निश्चित सांचे के अंतर्गत व्यवस्थित करते हैं, ताकि हमारे द्वारा की जाने वाली परिकल्पना एवं किए जाने वाले शोध कार्य के बीच एक सातत्य बना रहे। किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसकी एक शोध रूपरेखा बना लेनी चाहिए, चाहे वह शोध पत्र, सामान्य लेख अथवा किसी पुस्तक का पाठ हो, इससे हमें अमुक कार्य को करने में कम समय एवं उसके बेहतरीन प्रस्तुतीकरण का लाभ मिलेगा।

एक अच्छी शोध रूपरेखा आपकी शोध यात्रा की मानचित्रावली के रोड-मैप का उद्देश्य पूर्ण करती है। इससे पहले कि आप अपने शोध हेतु एक योजना बनाएं आपको अपने अध्ययन के क्षेत्र का एक विस्तृत अवलोकन होना चाहिए। आपको निश्चित रूप से पता होना चाहिए कि विषय पर क्या कार्य पहले किया जा चुका है और आपको पता होना चाहिए कि आप क्या उपलब्धि चाहते हैं? आपको समाधान दृष्टि से क्षेत्र में कुछ प्रश्नों और समस्या को खड़ा करना चाहिए। आपके मस्तिष्क में आपके कार्य के दौरान कई प्रश्न या शंकाऐ आएंगे, इसीलिए आपको उन्हें तत्काल लिख लेना चाहिए। आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि इन विचारों पर आप अपने पर्यवेक्षक अर्थात शोध निर्देशक के साथ चर्चा करें।

आपको सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए और निष्कर्ष पर पहुंचने की हड़बड़ी नहीं होनी चाहिए । अपने सहकर्मियों और पर्यवेक्षक से विचारों का आदान प्रदान के बाद आप उनका वास्तविक मूल्य जान पाएंगे । आपको इन प्रश्नों को विभिन्न परिकल्पनाओ (Hypothesis) के रूप में रखना चाहिए, और नकली निश्चित अर्थों अथवा आपकी जांच उपलब्धि के रूप में, तब तक जब तक कि वे आपके पास उपलब्ध आंकड़ों पर जांच न लिए जाएं । इनमें से कुछ तो त्यागे भी जा सकते हैं, यदि दूसरी बार विचार करने पर अथवा अन्य शोधकर्ताओं अथवा पर्यवेक्षक के साथ चर्चा करने के बाद उपयुक्त ना पाए जाएं।

शोध प्रपत्र लिखने का कोई निश्चित प्रारूप नहीं होता है । प्रत्येक शोधकर्ता अपने ढंग से प्रपत्र को लिखता है और प्रपत्र का निजी प्रारूप होता है । शोध प्रपत्रों के अवलोकन तथा अनुभव के आधार पर एक व्यापक रूपरेखा विकसित की जा सकती है । एक उत्तम प्रकार की रूपरेखा शोध प्रपत्र के प्रारूप को तैयार करने में सहायक होती है तथा प्रपत्र लिखने में एक दिशा तथा प्रवाह के लिए उपयोगी होती है । शोध प्रपत्र तैयार करने से पूर्व प्रमुख बिंदुओं की एक सूची तैयार करनी चाहिए और प्रारूप में मुख्यतः तीन बिंदुओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए :

# शोध रूपरेखा की तैयारी एवं आंकड़ा प्रस्तुत करने की विधि

1. प्रस्तावना,

2. विषय–वस्तु; मुख्य अंग तथा

3. शोध के प्रमुख निष्कर्ष।

**प्रस्तावना** में शोध की समस्या की स्पष्ट रूप से परिभाषा दी जाती है। शोध का प्रमुख आशय प्रस्तुत किया जाता है और उसके महत्व का संक्षिप्त उल्लेख भी किया जाता है।

**विषयवस्तु** का मुख्य अंग शोध प्रबंध से ही लिया जाता है। पत्र में शुद्ध क्रियाओं का संश्लेषण किया जाता है, जिससे पाठक शोध के निष्कर्षों की ओर अग्रसर होता है। शोध प्रपत्र का रूप रचनात्मक तथा आलोचनात्मक होना चाहिए। प्रपत्र के रचनात्मक पक्ष में शोध के प्रमुख क्रियाओं को क्रमशः प्रस्तुत किया जाता है। आलोचनात्मक पक्ष में शोध के कार्यों एवं निष्कर्षों का विवेचन आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। और शोध के महत्व का उल्लेख करते हैं। प्रपत्र के इस अंग का मुख्य लक्ष्य यह होता है कि जो कुछ शोध में दिया गया है उसको प्रस्तुत किया जाए। शोधकर्ता को अपने विचारों की संतुष्टि संदर्भों प्रदतों एवं सांख्यिकी के आधार पर अवश्य करनी चाहिए।

**शोध निष्कर्ष** - शोधकर्ता को अपने प्रमुख निष्कर्षों को कथनों के रूप में प्रस्तुत करना होता है। निष्कर्षों के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क भी देनी चाहिए। शोध के निष्कर्षों की सहायता से इनकी संस्तुति भी की जानी चाहिए। यदि निष्कर्षों की उपयोगिता किसी क्षेत्र में हो सकती है तो उसका उल्लेख करना चाहिए।

शोध प्रपत्र के अंत में संदर्भ सूची अवश्य देनी चाहिए जिससे शोध कार्य की वैधता बढ़ती है और शोध कार्य के अध्ययन एवं जानकारी की चर्चा होती है। शोध प्रपत्र वर्तमान अथवा भूतकाल में लिखा जाता है।

**शोध प्रपत्र से लाभ –**

1. शोधकर्ताओं को अपने शोध सर्वेक्षण तथा समीक्षा पत्रों से अधिक सुगमता हो जाती है।
2. शोधकर्ताओं को नवीन ज्ञान तथा शोध कार्य के संबंध में जानकारी होती है।
3. शोधपत्र से विभिन्न शोध कार्यो के संबंध में जानने में समय, धन तथा शक्ति का अपव्यय नहीं होता है।
4. अन्य शोधकर्ता समान कार्य की पुनरावृति से बच जाते हैं।

इसके अतिरिक्त शोध के अध्यायीकरण की प्रक्रिया को हम निम्नांकित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं :-

## पाठ्य सूची

**भूमिका**

**तालिका की सूची**

**आकृति सूची**

**अध्याय**

अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम **प्रस्तावना** - प्रस्तावना के अंतर्गत **समस्या का स्वरूप, शोध के उद्देश्य, सैद्धांतिक आधार, अवधारणाएं तथा परिसीमाएं** की चर्चा की जाती है । तत्पश्चात **संबंधित स्रोतों की समीक्षा** अर्थात **साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक स्रोत** । इसके पश्चात **शोध का प्रारूप** जिसके अंतर्गत **शोध विधि तथा न्यादर्श, शोध प्रक्रिया** एवं **शोध प्रविधियों** की चर्चा की जाती है । अगले चरण में **प्रदत्तो का विश्लेषण,** तत्पश्चात **शोध निष्कर्ष एवं सुझाव** इसके अंतर्गत **शोध निष्कर्ष, शोध में निष्कर्षों की आलोचना** एवं **शोध निष्कर्षों की उपयोगिता तथा महत्व** की चर्चा करते हैं । अंततोगत्वा **सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची** एवं **परिशिष्ठ** तथा **तालिका-सूची** को प्रस्तुत किया जाता है ।